अश्वों मे कृत्रिम गर्भाधान के लाभ

- नर अश्व से एक बार में एकत्रित वीर्य द्वारा एक समय में या हिमीकरण विधि से भण्डारण कर आवश्यकतानुसार कई मादा अश्वों को गर्भित करना सम्भव है।
- कम व्यस्त दिनों में वीर्य एकत्रित एवं भण्डारण कर अत्याधिक व्यस्त घोड़ों से गर्भाधान सम्भव हैं।
- गर्भाधान के लिये अश्व सांड या घोड़ी की अपेक्षा वीर्य को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना आसान है।
- नर अश्व से प्राप्त वीर्य का भण्डारण कर उसकी मृत्यु के बाद भी प्रयोग किया जा सकता है।
- अच्छे नर अश्व जो पैरो में चोट लग जाने या अन्य किसी कारणवश मादा अश्व पर चढ नहीं पाते इस विधि द्वारा उनके वीर्य का उपयोग करना संभव है।
- इस विधि मे अश्व सांडो एवं मादाओं के जनन अंगो की जांच कर उन रोगों से बचाया जा सकता है जो रोग जनन इन्द्रियों के माध्यम से फैलते है।
- इस विधि से अश्व सांडो की सन्तति परीक्षण एवं नस्ल अनुवांशिक सुधार कम समय मे हो जाता है।
- जो घोड़ियां चोट लग जाने के कारण प्राकृतिक सम्भोग के योग्य नहीं रह जाती उन्हें भी इस विधि द्वारा गर्भित करके उनसे बच्चे लिये जा सकते है।
- खच्चर उत्पादन हेतू घोड़ी को गर्दभ के वीर्य से गर्भित किया जाता है जबकि आमतौर पर घोड़ियां गर्दभ को प्राकृतिक सम्भोग की अनुमति नहीं देती। ऐसी स्थिति में कृत्रिम गर्भाधान अपनाकर उत्तम किस्म के खच्चर पैदा किये जा सकते है।

अश्वों में कृत्रिम गर्भाधान के चरण

Artificial Insemination (AI) steps in Mares

Frozen semen processing for AI